सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

मई-जून, 2005

अखंड सत्यनिष्ठा

मेरी खुशी के कुछ दिनों में वे दिन आये, जब यह निर्णय लिया गया कि मैं अपने दयालू, दाढ़ीवाले पिताजी के साथ, दुकान में सहायक के तौर पर काम कर पाऊँगी। पिताजी का साथ मुझे बहुत पसंद था और उस दुकान से भी मेरा लगाव था।

घड़ी बनाने के व्यवसाय में बहुत उतार-चढ़ाव रहते थे। पिताजी को अपने काम से लगाव था, मगर वे धन के लोभी नहीं थे और बहुधा समय कठिन रहता था। मुझे याद है कि एक बार हमें बड़े आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। बहुत बड़े बिल का भुगतान करना था और पर्याप्त रकम पास में नहीं थी। तब एक दिन अच्छी वेश-भूषा पहिने एक सज्जन दुकान में आये और कुछ बहुत मंहगी घड़ियां देखने की मांग करने लगे। मैं कार्यशाला में रहकर सामने की कोठरी में हो रही बातचीत पर एक कान लगाये प्रार्थना कर रही थी।

'हम्म...यह एक अच्छी घड़ी है, मिस्टर टेन बूम, यह वही है जिसे मैं खोज रहा था।', अपने हाथों में एक मंहगी घड़ी लेते हुए ग्राहक ने कहा। अपनी अंदर की जेब तक हाथ पहुंचाकर रुपयों का मोटा गट्ठा बाहर निकाला और मैं अपने सांस रोके उस सुसम्पन्न ग्राहक को देख रही थी। प्रभु की स्तुति हो - नकदी!, मैंने अपने आपको कल्पना करते पाया कि काफी समय से बाकी बिल का मैं भुगतान कर रही हूं तथा इसकी चिंता के बोझ को जिसे पिछले कुछ हफ्तों से उठाये थी, उससे

पृष्ठ २ पर..अखण्ड सत्यनिष्ठा..

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

सच्चा संजीवन

जब किसी की शारीरिक या आत्मिक सेहत बिगड़ती है तो इन खतरों के कुछ चिन्ह हमें स्पष्ट नज़र आने लगते हैं। अपने शरीर की बिगड़ती हालत की देखभाल करने के लिए हम एक दम डॉक्टर की सलाह तथा उपचार को पाने के लिए दौड़ लगाते हैं। यह सच है कि हमें इन खतरों के चिन्हों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, यह जानते हुए कि वह हृदयगति रुकने का कारण बन सकते हैं। यह बात मुझे बिलकुल समझ में नहीं आती कि कैसे सोच-समझ रखने वाले लोग अपने चारों ओर तथा अपने ही परिवार में होने वाले नैतिक हनन के प्रति उदासीन रहते हैं।

यिर्मयाह, जो इस्राएल के पापों को देख कर रोया। उसने न केवल उनके अत्यधिक नैतिक तथा आत्मिक हनन को देखा बल्कि परमेश्वर के आने वाले दण्ड के विषय में भी चेतावनी दी। यदि इस्राएली लोगों ने उसकी समयानुसार चेतावनी को सुन कर अपने पापों से पश्चाताप किया होता तो अपने आपको और अपने बच्चों को अनेक तकलीफों और दुख से बचा लिया होता।

अधिकतर लोगों के जीवन में, जिन्होंने बड़ी आत्मघातक गलतियाँ कीं या परमेश्वर को बड़ा कष्ट पहुँचाया। यह बात देखी गई है कि उनके जीवन में बड़े अन्धकार का समय आता है। उस समय वह अपनी गिरी हुई आत्मिक स्थिति को देख पाने में असमर्थ रहते हैं। यह आत्मिक अंधेपन का दौर इतने अधिक समय तक रहता है कि व्यक्ति या उसके परिवार को गम्भीर हानि पहुंचती है। जब तक वे जागें, तब तक उस हानि को दूर करने का समय बीत चुका होता है। स्थायी हानि बनी रहती है और बच्चे नाश होते हैं।

आरम्भ में तोड़ी आज्ञा के कारण, हानि तथा दर्द पीढ़ियों तक बना रहता है। हमारे आज्ञा तोड़ने के फल के चिन्ह, हमारे वंशजों में स्पष्ट नजर आते हैं।

जब जवानी के पापों का फल तथा बाद के सालों में आज्ञाओं के तोड़ने का असर इतना भयंकर होता है तो हरेक को बड़ी गहराई से अपनी हर उस गलती के लिए जो हमें पवित्रता के मार्ग से अलग ले गई है, उसके लिए प्रभु यीशु मसीह से सच्चे टूटे मन के साथ माफी मांगनी चाहिए।

यिर्मयाह रोकर कहता है, 'बीते हुए दिनों के समान हमारे दिनों को पुनः नया कर।' यह कोई साधारण मन को खुश करने वाले 'अच्छे बीते हुए दिन' की चर्चा नहीं है। कभी-कभी यह वाक्यांश भरमा देने वाला भी हो सकता है। हमारे दिनों में ज्ञान काफी बढ़ गया है। इस कारण चारों तरफ काफी बदलाव हो रहे हैं। कई गहरी जड़ पकड़े अंधविश्वासों को तोड़ा जा रहा है और इस कचरे को दूर करने के साथ कई लाभदायक व्यवहारिक मूल्यों को भी फेंका जा रहा है। परमेश्वर की ओर से निर्धारित विवाह संबंध को बहुत से लोग भंग कर, अपने घरों का नाश कर रहे हैं।

२० से ३० साल की उम्र के बीच के वर्ष जीवन के दौर में बड़ी तेजी से बीतते हैं। जब तक नौजवान २० से ३० साल की उम्र में तेजी से पहुंचते हैं, वे उलझन में फंसे हुए, टूटे हुए, थके, मरियल हो जाते हैं। वे किसी प्रकार अपनी किशोरावस्था तथा जीवन के तीसरे दशक को भुला देना चाहते हैं।

यिर्मयाह जानता था कि परमेश्वर ने अपने बच्चों को यह वादा किया हुआ था, वह उन्हें पूंछ नहीं सिर बनाएगा, यदि वे उनकी आज्ञाओं तथा नियमों का पालन करेंगे - व्यवस्थाविवरण (२८:१३)। इससे बढ़कर यिर्मयाह के दिमाग में यह बात गहरी छाप छोड़े थी कि कैसे परमेश्वर बिना किसी गलती के अपने जनों को मिस्र की गुलामी से लाल सागर तथा रेगिस्तान को पार कर लाया था। इस कारण उसके लिए यह प्रार्थना करना स्वाभाविक था, 'प्रभु वापस हमारे पास लौट, प्रभु हमें नयापन दे।'

परमेश्वर के सच्चे बच्चों के लिए आत्मिक

पृष्ठ २ पर..सच्चा संजीवन..

पृष्ठ १ से..सच्चा संजीवन..

नयापन पाते रहना बड़ा आवश्यक है, हर कलिसिया, हर हमारे जैसी फैलोशिप के लिए यह अतिआवश्यक है। प्रभु यीशु ने कहा कि परमेश्वर का राज्य सरसों के दाने के समान है। सरसों का दाना नन्हा तथा नगण्य प्रतीत होता है। लेकिन वह तब तक पनपता है और बढ़ता जाता है, जब तक वह इतना बड़ा न हो जाए कि पक्षी उस पर अपना बसेरा बनाएं। **इसी प्रकार एक नम्र व्यक्ति तथा टूटे हुए मन के व्यक्ति में नया जीवन पैदा होता है।**

जब नया जीवन आरंभ होता है, महत्वपूर्ण घटनाएं घटनी आरंभ होती हैं। नीरस, दर्द से भरे तथा उदासीन जीवन के स्थान पर नई शक्ति तथा अनुग्रह पैदा होता है। कितने लोगों ने मुझे यह बताया है कि उन्होंने अपने जीवन का अंत स्वंय करने की योजना बनाई थी। उस धुंधलाहट तथा अंधकार के समय अचानक प्रभु यीशु उनसे मिले। उनका जीवन पूर्ण रूप से ऐसा परिवर्तित हो गया कि लोग पहचान भी नहीं पा रहे थे कि यह वही व्यक्ति है।

ये अंधकार की शक्तियां हैं, जो कहती हैं, 'अपना अंत कर ले, एक छलांग, एक कूद, जहर की एक घूटं और सब कुछ पूरा हो जाएगा, तुम्हारी तकलीफ खत्म हो जाएगी।' **नहीं, यह सत्य नहीं है।** वास्तविक तकलीफ नरक में आरंभ होती है, 'जहाँ कीड़े मरते नहीं और आग बुझती नहीं'। आत्महत्या करना बहुत बड़ा पाप है। परमेश्वर कहते हैं, 'तुम हत्या न करना', मृत्यु किसी के दुखों का इलाज नहीं है बल्कि वह उस दर्द और वेदना को बढ़त देती है और आपके आस-पास के लोगों का दुख बढ़ जाता है।

आओ सकारात्मक बनें, आओ परमेश्वर को मौका दें। जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं तथा अपनी ज़रूरतें जीवित परमेश्वर को बताना आरंभ करते हैं, आशा पैदा होने लगती है और उस उद्धारकर्ता पर विश्वास होना शुरू हो जाता है, आपका उदासीन दिल अब प्रेम से भरना चालू हो जाता है।

क्या तुमने अपनी सेहत खोई है ? प्रभु यीशु से दुबारा माँगो। मुझे पूरी तरह याद है, मेरे बचपन में वह डॉक्टर, जिसे टैक्सी में बैठाकर हमारे घर में लाया गया था। उसकी दुखी दिखाई देती पत्नी व टैक्सी चालक उस लकवे के मारे को घर के भीतर लाने में मदद कर रहे थे। मेरे पिता ने उसके लिए प्रार्थना की। कुछ दिन बाद, वही आदमी बिना किसी सहायता के अकेला मेरे घर से गया। प्रभु से माँगो कि वह आपकी सेहत को फिर से अच्छा करें।

आजकल कितने ऐसे लोग हैं जिनमें साहस की कमी है। मैं उनसे कहता हूँ, प्रभु यीशु से नया साहस माँगो, मज़बूत हिम्मत। जहाँ कहीं प्रेमाभाव, दूसरों की चुगली तथा कड़वाहट हो ,वहाँ साहस खो बैठना बड़ा आसान है। प्रेम इसका इलाज़ है।

हमारा परमेश्वर नई शुरुआतों का परमेश्वर है। वह नयेपन का परमेश्वर है और संजीवन का। जब एक पुरानी मोटर कार को काफी साल उपयोग करने के बाद त्यागा जाए तो कोई दुबारा उसकी मरमम्त नहीं करवाता। यदि आपको ऐसा लगे कि मेरा जीवन सुधर नहीं सकता, मैंने उसे बरबाद कर लिया है और बहुत खराब कर लिया है, फिर भी यीशु आपको पूरी तरह से नयापन दे सकते हैं। इसी कारण यह बात उनके विषय में कही गई हैं जो किसी दूसरे के विषय में नहीं कही जा सकतीं। वह वास्तव में उद्धारकर्ता है। आइए अपने घमंड को अपनी प्रगति में बाधा न बनने दें।

- जोशुआ दानिएल।

पृष्ठ १ से..अखण्ड सत्यनिष्ठा..

मुक्त हो गई हूं।

उस ग्राहक ने उस घड़ी की ओर प्रशंसा से देखा और टिप्पणी की, 'इधर हारलैम में मेरा एक अच्छा घड़ी-साज़ था....उनका नाम वान हॉटन था। शायद आप उनको जानते हों।'

पिताजी ने हामी भरते हुए अपना सिर हिलाया। वे हारलैम में लगभग सभी को जानते थे खासकर दूसरे घड़ी साजों को।

'जब वान हॉटन का देहान्त हुआ और उनके पुत्र ने कारोबार का नियंत्रण अपने हाथों में लिया, उस नौजवान के साथ मैंने अपना कारोबार जारी रखा। उसके बाद मैंने उनसे एक घड़ी खरीदी जो बिलकुल नहीं चली। मैंने उसे तीन बार वापस भेजा. पर लगा कि वे उसे ठीक नहीं कर पाए। इसलिए मैंने किसी दूसरे घड़ी-साज को ढूढ़नें का निर्णय लिया।'

'कृपया वह घड़ी मुझे दिखायेंगे?' पिताजी बोले। उस आदमी ने अपने कोट की जेब से एक बड़ी घड़ी निकालकर पिताजी को दी।

उस घड़ी के पीछले भाग को खोलते हुए पिताजी ने कहा, 'ज़रा, मुझे देखने दीजिए।' कुछ पुर्जे छू कर पिताजी ने सही किये और घड़ी ग्राहक को वापस सौंप दी। 'इसमें केवल छोटी सी खराबी थी अब ठीक हो जाएगी। साहब, उस नौजवान घड़ी-साज पर मेरा विश्वास है। जल्द ही वह ठीक अपने पिता की ही तरह अच्छा कारीगर बनेगा। इसलिए जब कभी उनकी किसी भी घड़ियों के साथ समस्या हो, तो मेरे पास ले आना। मैं आपकी मदद करूँगा। अब आप मेरी घड़ी लौटा दीजिये और मैं आपको आपके पैसे वापस कर देता हूं।'

मैं भय से भरी और चिन्तित थी। पिताजी को मैंने घड़ी वापस लेकर उस ग्राहक को पैसे लौटाते हुए देखा। तब वे अपनी पुरानी आदतानुसार झुके और ग्राहक का अभिवादन करते हुए दरवाज़े को खोला।

जैसे मैं कार्यशाला की पनाह से उभर रही

पृष्ठ ३ पर..अखण्ड सत्यनिष्ठा..

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
GWALIOR : L-95, Madhav Nagar, Gwalior-474002, Madhya Pradesh. Ph.0751-2636434
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

कृतज्ञता का एहसास

एक भूखा आदमी अपने एक कौर के लिए, एक रईस आदमी से ज्यादा कृतज्ञ होगा, जो अपने भरपूर भोजन से लदी मेज से होता हो। उपचार-गृह मे स्थित एक महिला से मिलने पर, एक जनप्रिय महिला जिसके सम्मान में एक पार्टी मनाई जा रही हो, वह उनसे ज्यादा कृतज्ञ होगी। एक रूसी जिनको पचहत्तर साल की राज्य-अधिरोपित निरीश्वरवाद के बाद आखिर में, पवित्र बाइबल की एक प्रति अपने खुद के लिए मिली हो तो - हमारी सब मसीही पुस्तकें, पत्रिकाएं और अनुवादों को जो हमारी अलमारियों में भरे रहते हैं, जितना उन सब के लिए हम कृतज्ञ होते हैं उस से ज्यादा वह उस छोटी सी पुस्तक के लिए होगा।

राल्फ वॉलडो एमरसन ने यह अवलोकन किया है कि हजार सालों में यदि एक ही बार तारामंडल नक्षत्र प्रकट होंगे तो कल्पना करो कि वह कितनी उत्तेजक घटना होगी। मगर हर रात को वे दिखाई देते हैं। इसलिए मुश्किल से हम उन पर नज़र डालते हैं।

हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य का एक प्रमाण यह है कि हमारा उलझा हुआ जीवन सुलझने लगता है। परमेश्वर हमको ऐसे लोग बनाना चाहते हैं जो प्राप्त किये वरदानों और आशीर्वादों के बदले, सही अनुपात में अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करें। हमारे जीवन में, प्राप्त किये आशीर्वादों की मात्रा की तुलना में, कृतज्ञता का अंश उल्टे अनुपात में हम प्रदर्शित करते हैं। मार्टिन लूथर ने अपनी पुस्तक टेबल टॉक में लिखाः 'परमेश्वर के वरदान और कार्य जितने महत्तम, उतना कम उनका लिहाज़ है।'

'कृतज्ञ' और 'सोच', इन शब्दों का जन्म एक ही जड़ से हुआ है, हमें ये याद दिलाते हैं कि हमारे आशीर्वादों के बारे में सोचने से ही कृतज्ञता उभरती है। हेलेन केल्लर ने एक बार कहा, 'बहुधा मैं यह सोचती थी कि अगर हर मनुष्य को अपने प्रारंभिक बालिग अवस्था के दौरान, किसी भी समय पर कुछ दिनों के लिए अंधेपन और बहरेपन से पीड़ित होना एक आशीर्वाद होगा। यह उनको दृष्टि और ध्वनि के हर्ष के लिए ज्यादा कृतज्ञ बना देगा।'

सीनेट सदस्य रिचर्ड न्यूबरगर ने एक बार कहा कि कैंसर का रोग लगने के अनुभव ने उनको परिवर्तित किया। एक परिवर्तन मुझ पर आया जो मैं मानता हूं कि अनुक्रमणीय है। प्रतिष्ठा, राजनीतिक सफलता, आर्थिक स्थिति जैसे प्रश्न अचानक सब महत्वहीन हो गए हैं। इन सबके बदले में एक नई प्रशंसा आई, उन चीजों के प्रति जो एक समय मैं अपने वश में समझता था - एक मित्र के साथ मध्याहन भोजन करना, मफ़ेट का कान खुजलाना और उसकी घुरघुराहट सुनना, मेरी पत्नी की संगति, रात में अपने बिस्तर के शांत कोने में पुस्तक या पत्रिका पढ़ना, एक गिलास संतरे का रस या कॉफी केक के एक टुकड़े के लिए रेफ्रिज़रेटर पर धावा करना।

मैं सोचता हूं कि पहली बार जीवन का असली लुत्फ उठा रहा हूँ। मैं थरथराता हूँ जब मैं उन अवसरों को याद करता हूँ जिनको मैंने खुद बिगाड़ा है जब अपनी सेहत की अच्छी स्थिति में था - मेरे तुच्छ अभिमान, संलिष्ट (कृत्रिम) प्रमाण और काल्पनिक दुर्बलताओं के द्वारा।

धन्यवाद, परमेश्वर का मेरे तारणहार के लिए
धन्यवाद, तेरा सबकुछ देने के लिए
धन्यवाद, उन पलों के लिए जो हैं यादगार अब
धन्यवाद, अब है यीशु मेरे साथ

धन्यवाद, मधुर और सुखदायक बसंत के लिए
धन्यवाद, उस गहरे अंधकारमय ठोकर के लिए।
धन्यवाद, उन आंसुओं के लिए अब जो हैं भुलाए गए
धन्यवाद, मेरी आत्मा में शांति के लिए।

स्पष्ट प्रतिपक्ष प्रबन्ध

मूसा का जीवन प्रतिपक्ष प्रबन्धों का एक सिलसिला प्रस्तुत करता है। वह एक गुलाम का बच्चा और एक महारानी का पुत्र था। वह एक झोपड़ी में पैदा हुआ और उसने असीम सम्पत्ति का सुख उठाया। वह सेनाओं का अगुवा और झुण्ड का रखवाला था। वह योद्धाओं में शक्तिशाली पर पुरुषों में नम्र। वह राजदरबार में प्रशिक्षित हुआ और रेगिस्तान में रहा। उनमें मिस्र की अकल पर एक बच्चे का सा विश्वास था। वह शहर के योग्य था पर जंगल में भ्रमण किया। वह पाप की लालसा में लुभाया गया पर नैतिकता के लिए कठिनाइयां उठायीं। वह बोली में कमज़ोर था पर परमेश्वर ने उससे बातें कीं। उनके पास चरवाहे की लाठी थी और अनन्तता की सामर्थ्य। वह फिरोन के सामने फरारी था पर स्वर्ग का राजदूत था। वह व्यवस्था देनेवाला पर अनुग्रह की पूर्व चेतावनी था। मोआब पर्वत पर वह अकेला मरा पर मसीह के साथ यहूदा में प्रकट हुआ। उनकी अन्येष्टि पर किसी मानव ने सहायता नहीं की पर परमेश्वर ने उनको दफनाया।

पृष्ठ २ से..अखण्ड सत्यनिष्ठा..
थी तो मेरा दिल वहाँ था जहाँ मेरे पांव होने थे।

'पिताजी ! आपने यह क्या किया?'

पिताजी ने अपने स्टील फ्रेम वाले चश्मे के पार धैर्य से मेरी ओर देखा।

'कोरी' वे बोले, 'तुम जानती हो कि मैंने ही वान हॉटन के दफनाये जाने के समय सुसमाचार दिया था।'

अवश्य मुझे याद था। हारलैम के घड़ी-साजों के दफनाने के समय प्रभु यीशु के विषय में दो शब्द कहना पिताजी का ही काम था। वे अपने सहकर्मियों के प्रीतिपात्र थे और अच्छे वक्ता भी थे। प्रभु यीशु के बारे में बातचीत करने के लिए वे हमेशा उस अवसर का इस्तेमाल करते थे।

'कोरी, तुम क्या सोचती हो, वह नौजवान क्या कहेगा, जब वह सुने कि उनका एक अच्छा ग्राहक मिस्टर बूम के पास चला गया? तुम सोचती है कि इससे प्रभु के नाम की महिमा होगी? और जहां तक पैसे की बात, प्रभु पर विश्वास रखो, कोरी। हजार पहाड़ों पर जो पशु हैं उनके अपने हैं और वह हमारा उत्तरदायी रहेगा।'

मैं जानती थी कि पिताजी ही सही थे और मुझे शर्मिन्दगी महसूस हुई। मैं अचम्भे में पड़ गई कि अपने हठीले रास्ते के पीछे-पीछे चलने और अंधे इरादे के बदले में कभी उस किस्म का विश्वास परमेश्वर पर कर पाऊँगी। परमेश्वर में सचमुच भरोसा करना, क्या मैं सीख पाऊँगी?

'हाँ, पिताजी' मैंने शान्ति से उत्तर दिया। मैंने उत्तर किसे दिया? धरती पर अपने पिता को या पिता परमेश्वर को जो स्वर्ग में हैं?

- कोरी टेन बूम।

सत्य की परख!

(नीतिवचन ३:१-४) 'हे मेरे पुत्र मेरी शिक्षा को न भूलना, पर मेरी आज्ञाओं को हृदय से मानना, क्योंकि इनसे तेरे जीवन के दिन और वर्ष बढ़ेगें, और तू अधिक कुशल से रहेगा। करूणा और सच्चाई तुझ से अलग न हो। उन्हें अपने गले का हार बनाना, और अपने हृदय-पटल पर लिख लेना। इस प्रकार तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों की दृष्टि में अनुग्रह और यश प्राप्त करेगा।'

स्वर्गीय धन

'धर्मी का थोड़ा दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।' भजन (३७:१६)

इन दिनों आदमी हमेशा धन की खोज में है। उनका भरोसा धन में है। मगर प्रभु कहते हैं कि धर्मी का थोड़ा माल, उनके लिए सुरक्षा और खुशी लाता है। जो परमेश्वर को जानते हैं, दिव्य स्वभाव में धनी होने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए यह बहुत बड़ा आशीर्वाद है। ऐसा आदमी कहीं भी जाए, प्रसन्नता और स्वास्थ्य फैलाता है। वह स्थिर व्यक्ति है। 'यहोवा पर भरोसा रख और भला कर, देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। भजन(३७:३,४)'

परमेश्वर के जीवन के मार्ग में प्रसन्न होकर ही तुम अपने आपको प्रभु में प्रसन्न कर पाओगे। 'याह की स्तुति करो। क्या ही धन्य है वह पुरूष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है। उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा, सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी। भजन (११२:१,२)'

प्रभु की आज्ञाओं में प्रसन्न रहना - अनिच्छा से प्रभु का अनुगमन न करना। हो सकता है वे तुमको धनी न बना पाये - वे तुमको बड़ा और प्रमुख न बना पाये, मगर वे परमेश्वर का स्वभाव तुमको प्राप्त करवाते हैं, जो यीशु मसीह में प्रकट हुआ है। यह बहुत बड़ी आशीष है। वह तुम्हे शान्ति देगा। 'वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे, अपनी जीभ को बुराई से रोके रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले।' भजन (३४:१२-१४)

शान्ति खोजना और उसका अनुसरण (पालन) करना, इसलिए कि तुम शान्ति के राजकुमार की संतान हो। सम्भवतः तुम एक झोपड़ी मे बसे हो और सादा भाजन खाते हो, लेकिन अगर तुम में परमेश्वर की शान्ति और मसीह का स्वभाव है तो तुम एक आशीष पाये मनुष्य हो। जंगली जानवरों के बीच जंगल में शान्ति नहीं हो सकती। मनुष्यों के दिलों में शान्ति नहीं है। हृदय में युद्ध बसा है। 'तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगो में लड़ते-झगड़ते हैं? याकूब (४:१)' मनुष्य एक अशांत प्राणी है। वह अपने आप को नहीं जानता या यह कि उसे क्या चाहिए। वह धन खोजता है, जो उनके लिए शांति नहीं लाएगा। वे जो मसीह का स्वभाव खोजते हैं उनके पास शान्ति होगी। धर्मी का थोड़ा सा माल दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है। एक सच्चा धर्मी जन अपना मन धन पर नहीं लगाता है।

मनुष्य के स्वास्थ्य बनाए रखने में परमेश्वर की सब आज्ञाएं सहयोग करती हैं। जब आप एक घर का निर्माण कर रहे हो तो कई सिद्धातों का पालन करना पड़ता है। सिर्फ एक दीवार का निर्माण करने के लिए भी कुछ न कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। कई और नियम, नींव को बैठाने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं और इत्यादि। ऐसे ही हमारे जीवन के निर्माण के लिए परमेश्वर ने कई आज्ञाएं दी हैं। उस में से एक यह है कि धन की नहीं बल्कि परमेश्वर के स्वभाव की खोज करनी चाहिए। 'मैंने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुआ देखा, जैसे कोई हरा पेड़ अपनी निज भूमि में फैलता है। परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि वह वहां है ही नहीं, और मैंने भी उसे ढूंढा, परन्तु कहीं न पाया।' भजन (३७:३५-३६)

'यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है और उनका भाग सदैव बना रहेगा। विपत्ति के समय उनकी आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होंगे, और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे। मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं, परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।' भजन (३७:१८,१९,२५) धर्मी की संतान की परमेश्वर विशेष रूप से सुधि रखते हैं। जो आदमी अधर्म के पैसों के लिए हाथ न फैलाए, कठिन परिश्रम करता है तथा परमेश्वर का आसरा रखता है उसे तृप्त किया जाएगा। वह स्वर्गीय धन खोजता है और सुबह, दोपहर और रात इस धन को खोजने के लिए अपने आपको प्रशिक्षित करता है। उसके हृदय में युद्ध नहीं होगा।

अंततः परमेश्वर अपने नियम को तुम्हारे मन में रखने के लिए और तुम्हारे हृदय में लिखने को वचन देता है। दिमाग अपने तंत्रिक प्रतिक्रियाओं को नियन्त्रण करता है। तुम्हारी इच्छाओं और चाहत पर हृदय नियन्त्रण करता है। मनुष्य धन के पीछे भागते हैं और शाश्वत संपत्ति नहीं खोजते, जो है - परमेश्वर की धार्मिकता। जो आदमी यह नहीं सोचता कि अपने नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को सही करे वह धर्मी कैसे बना रहेगा? परमेश्वर की आराधना करने के लिए न आकर लोग कई तरह के बहाने बनाते हैं। क्या इस संसार में कोई परमेश्वर के साथ समय बिताकर पीड़ित हुआ है? क्या वे आगे जाकर अगुवे न बने? तुम में से कुछ लोग ज़रूर मिशनरि (प्रचारक) बनोगे। जो आदमी अपने बाइबल को जानता है और प्रार्थना करना जानता है वह एक दिन ज़रूर मिशनरि बनेगा। इधर-उधर हो रही सब सभाओं को नहीं भगना। तुम्हारा समय सीमित है। एक स्थान में स्थिरता से वृद्धि पाना बेहतर है। जो लोग इधर-उधर, प्रत्येक स्थान पर भागते हैं कुछ नहीं बटोरते। हम अपने को दूसरों से श्रेष्ठ नहीं मानते।

हमारे लिए परमेश्वर की खास बुलाहट है, जिसे हमको पूरा करना है। मूसा का काम यहोशू से अलग था। क्या हुआ होता अगर नहेम्याह ने यहोशू का अनुगमन किया होता? वे युद्ध लड़ते जाते और ज्यादा भूमि जीतते, जिसे से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता। हमारे लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य है। बहुत जानने का दावा हम नहीं करते हैं। उनकी कृपा से लड़खड़ाये बगैर, प्रकट किये गये स्तर के पीछे-पीछे हम चल रहे हैं।

-एन दानिएल

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।